१४. गढ़ आया पर सिंह गया

माँसाहेब की इच्छा : शिवाजी महाराज ने जयसिंह को जो तेईस किले दिए थे; वे अब भी मुगलों के पास ही थे । उन्हीं में से एक कोंढाणा किला भी था । एक दिन जिजामाता ने शिवाजी महाराज से कहा, ''बेटा शिवबा, कोंढाणा जैसा सुदृढ़ किला मुगलों के हाथ में हो, यह ठीक नहीं है, उसे वापस ले लो ।'' पुणे के पास का कोंढाणा किला स्वराज्य के अंतर्गत हो; इसलिए शिवाजी महाराज भी बेचैन थे । कोंढाणा मुगलों के अधिकार में हो; यह बात जिजामाता और शिवाजी महाराज के मन को साल रही थी ।

तानाजी मालुसरे : तानाजी प्रारंभ से ही शिवाजी महाराज का साथी था । कोकण में महाड़ के पास उमरठे नाम का गाँव है । तानाजी वहाँ का रहने वाला था । शिवाजी महाराज के काम में देरी अथवा टालमटोल करना तानाजी जानता ही नहीं था । महाराज जो भी काम कहें, उसे करने के लिए तानाजी हमेशा तत्पर रहता था । बड़ा साहसी साथी था । वह शरीर से भारी-भरकम और शक्तिशाली था । बुद्धि से भी चतुर था । शिवाजी महाराज के प्रति उसकी प्रगाढ़ निष्ठा थी ।

तानाजी की प्रतिज्ञा

पहले विवाह कोंढाणा का : तानाजी अपने बेटे की शादी की तैयारी में व्यस्त था । रायबा उसका इकलौता बेटा था । तानाजी के घर में रायबा की शादी की तैयारियाँ जोरों से चल रही थीं । विवाह में चार दिन बाकी थे । तानाजी ने सोचा, 'शिवाजी महाराज और माँसाहेब को भी शादी में बुलाएँ ।' शेलारमामा को साथ लेकर वह रायबा की शादी का निमंत्रण देने शिवाजी महाराज के पास पहुँचा । शेलारमामा ने शिवाजी महाराज को विवाह का निमंत्रण दिया । शिवाजी महाराज ने कहा, ''शेलारमामा, आप रायबा की शादी कीजिए । हम शादी में न आ सकेंगे क्योंकि हम स्वयं कोंढाणा किला जीतने जा रहे हैं ।''

शिवाजी महाराज के ये वचन सुनते ही तानाजी मालुसरे ने कहा, ''महाराज, तानाजी के जीवित रहते ऐसे खतरनाक काम के लिए आप स्वयं जाएँगे ? फिर हम किसलिए हैं ! नहीं... नहीं... ऐसा नहीं हो सकता । पहले विवाह कोंढाणा का फिर रायबा का । कोंढाणा जीतने के लिए मैं ही जाऊँगा । आप मुझे आशीर्वाद दीजिए ।''

तानाजी की योजना : तानाजी कोंढाणा जीतने के लिए निकला । कोंढाणा किले पर जयसिंह द्वारा नियुक्त उदयभान नामक राजपूत

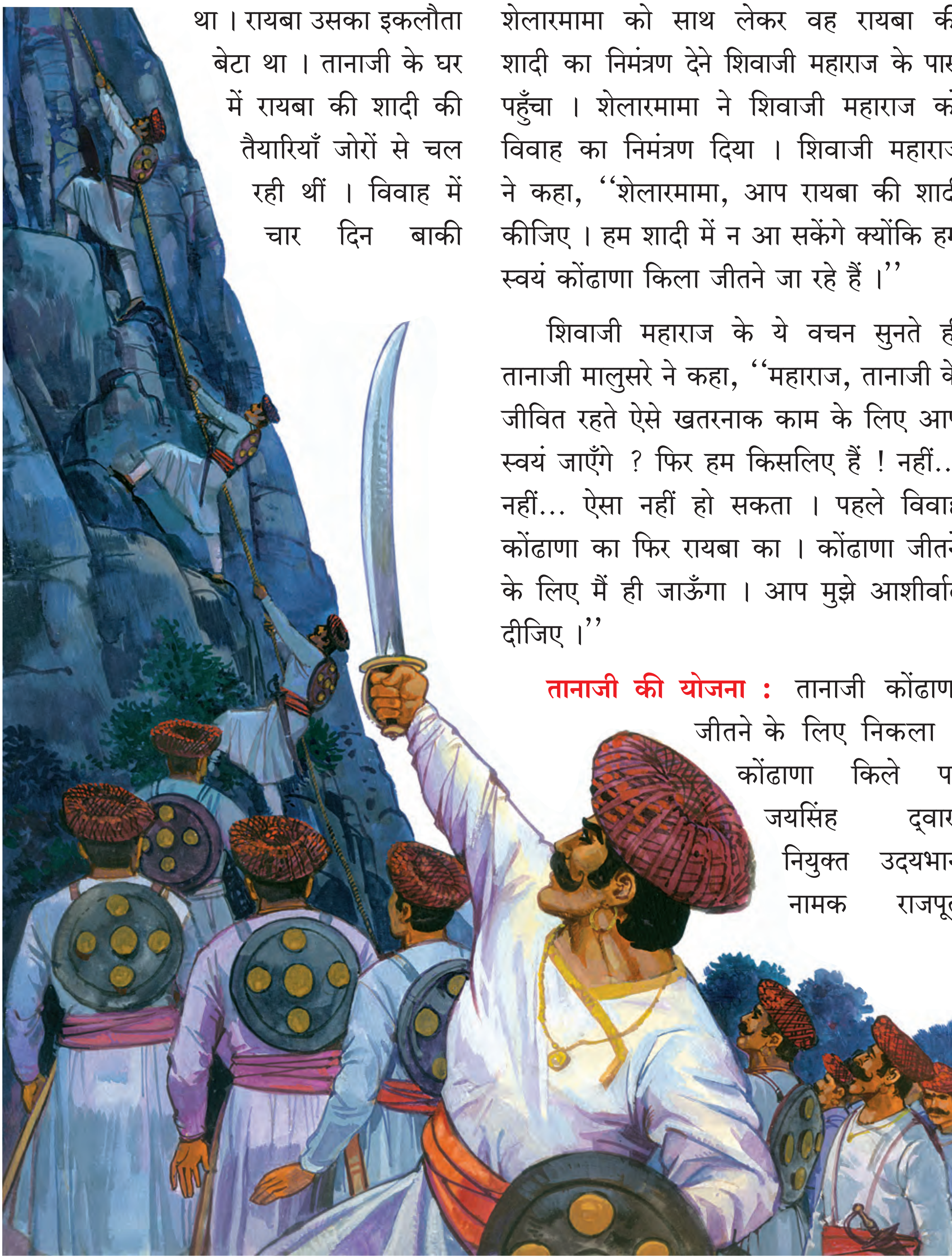

तानाजी की कोंढाणा पर चढ़ाई

किलेदार था । वह बहुत कठोर था । गढ़ के दो दरवाजे थे । दोनों जगहों पर उदयभान ने कड़ा पहरा लगा रखा था, तब गढ़ पर जाएँ कैसे ? तानाजी ने गढ़ की टोह ली । पश्चिम की ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे । उस ओर पहरा नहीं था । तानाजी ने खड़ी चट्टान पर चढ़कर ऊपर जाने का निश्चय किया । तानाजी ने अपने छोटे भाई से कहा, ''सूर्याजी, पाँच सौ साथी लेकर तुम कल्याण दरवाजे तक पहुँच जाओ । मैं तीन सौ मावले लेकर खड़ी चट्टान चढ़कर गढ़ पर जाता हूँ । गढ़ पर चढ़ते ही हम कल्याण दरवाजा खोल देंगे । फिर तुम सब एकदम अंदर घुस जाना । हम शत्रु सेना को रौंद देंगे, चलो ।'' सूर्याजी और तानाजी दोनों दो रास्तों से निकल पड़े ।

खड़ी चट्टान से गढ़ पर : रात का समय था । तानाजी और उसके मावले खड़ी चट्टान के नीचे अँधेरे में खड़े थे । रात में कीड़े कर्कश आवाज कर रहे थे । तानाजी के पाँच-छह युवा मावले खड़ी चट्टान चढ़ने के लिए आगे बढ़े । कितना ऊँचा पहाड़ लेकिन वे धीरे-धीरे पहाड़ की दरारों को पकड़कर हिम्मत से खड़ी चट्टान पार कर गए । ऊपर पहुँचते ही उन्होंने रस्सी का एक सिरा एक पेड़ से बाँध दिया । फिर क्या था ! तानाजी और उसके साथी मावले रस्सी के सहारे शीघ्रता से बंदरों की तरह खड़ी चट्टान चढ़कर गढ़ पर पहुँच गए ।

तानाजी का पराक्रम : इधर सूर्याजी अपने मावलों के साथ कल्याण दरवाजे तक पहुँच गया था और वह दरवाजा खुलने की राह देख रहा था । लड़ाई आरंभ हो गई । उदयभान को खबर लगी । नगाड़ा बजते ही उदयभान की सेना मावलों पर टूट पड़ी । घमासान युद्ध प्रारंभ हुआ । तलवारों से तलवारें टकराने लगीं । बिजली की गति से एक-दूसरे पर वार होने लगे । ढालें खनकने लगीं । मशालों का नृत्य शुरू हो गया । मावलों ने कल्याण दरवाजा खोल दिया । तानाजी शेर की तरह लड़ रहा था । उदयभान उसपर टूट पड़ा । दोनों के बीच युद्ध शुरू हुआ । दोनों ही वीर और पराक्रमी थे । कोई पीछे हट नहीं रहा था । अचानक तानाजी की ढाल टूट गई । उसने हाथ पर दुशाला लपेट लिया । दुशाला पर वार रोकते हुए वह लड़ने लगा । अंत में दोनों ही एक-दूसरे की तलवारों से घायल हुए और वीरगति को प्राप्त हुए ।

गढ़ आया पर सिंह गया : तानाजी शहीद हो गया । यह देखकर मावलों का धीरज छूट गया । वे भागने लगे । उसी समय सूर्याजी और उसके साथी मावले कल्याण दरवाजे से भीतर आ पहुँचे थे । अपने भाई को मृत देखकर सूर्याजी को बहुत दुख हुआ परंतु वह समय दुखी होने का नहीं था । वह समय लड़ने का था । सूर्याजी ने पहाड़ के ऊपर की रस्सी काट दी । उसने भागने वाले मावलों को रोका और कहा, ''अरे, तुम्हारा बाप यहाँ मरा पड़ा है और तुम कायरों की तरह भाग रहे हो ? वापस आओ । मैंने पहाड़ की रस्सी काट दी है । या तो पहाड़ से कूदकर मर जाओ या फिर शत्रु पर टूट पड़ो ।''

मावले वापस लौटे । घमासान युद्ध हुआ । मावलों ने गढ़ जीत लिया लेकिन गढ़ को जीतने में तानाजी जैसा पराक्रमी सरदार मारा गया । जिजामाता और शिवाजी महाराज को यह समाचार

मिला तो उन्हें बड़ा दुख हुआ । गढ़ अधिकार में आया परंतु सिंह के समान पराक्रमी तानाजी मारा गया । शिवाजी महाराज ने शोक प्रकट करते हुए कहा, ''गढ़ आया पर सिंह गया ।''

कोंढाणा का 'सिंहगढ़' नाम सार्थक हुआ । यह घटना ई.स. १६७० में घटी । बाद में उमरठे गाँव जाकर शिवाजी महाराज ने स्वयं रायबा की शादी करवाई ।

स्वाध्याय

१. उचित विकल्प के गोल को रँगो :

(अ) तानाजी कोंकण के इस गाँव का निवासी था ।

(१) महाड़ ○ (२) चिपलूण ○
(३) उमरठे ○ (४) रत्नागिरि ○

(आ) जयसिंह द्‌वारा नियुक्त उदयभान इस किले का किलेदार था ।

(१) पुरंदर ○ (२) कोंढाणा ○
(३) रायगढ़ ○ (४) प्रतापगढ़ ○

(इ) तानाजी के भाई नाम था ।

(१) रायबा ○ (२) सूर्याजी ○
(३) मुरारबाजी ○ (४) फिरंगोजी ○

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) कोंढाणा किला किसके अधिकार में था ?

(आ) कोंढाणा किले के बारे में जिजामाता ने शिवाजी महाराज से क्या कहा ?

(इ) ''पहले विवाह कोंढाणा का फिर रायबा का'' ऐसा किसने कहा ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) शेलारमामा ने शिवाजी महाराज को शादी का निमंत्रण दिया तब शिवाजी महाराज ने क्या कहा ?

(आ) सिंहगढ़ पर सूर्याजी ने मावलों से क्या कहा ?

उपक्रम

अपने परिसर के ऐतिहासिक भवनों/किलों की सूची बनाओ ।

6JNV5H